RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 5 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 6 जुलाई 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तम सिंह पांगती से बातचीज

धमर राय का जनसेवा के प्रति समर्पण हमेशा याद किया जायेगा

मापांग में नदी का रुख बदलने और मिलम में दूधपानी लाकर समाज के लिये अपने को समर्पित कर दिया

बोर्ड परीक्षा देने के लिये मुनस्यारी से काण्डा सेन्टर तक दो दिन की पैदल यात्रा करनी पड़ती थी

पढ़ाई की धुन में लैम्प के चारों ओर बैठकर पढ़ते थे, इलाहाबाद में पठन-पाठन का यही माहौल मिला तो दिन-रात एक कर दिया था

कार्यालय प्रतिनिधि

अक्सर हम यादों की बारात में सात समन्दर पार जैसी बातें करने लगते हैं और अपने आस-पास के उन महानुभावों को भूल जाते हैं जिनका योगदान समाज के लिये बुनियाद रहा है। ऐसे कर्मठ, दानियों व प्रेरणादायी जनों का स्मरण बराबर होना चाहिये। ऐसे ही महान जन सेवक रहे हैं- 'धरम राय'। मापांग में नदी का रुख बदलने और मिलम में दूध पानी लाकर समाज के लिये अपने को समर्पित करने वाले धरम राय जी के बारे में उनके परिवार के रिटा.जज श्रीमान उत्तम सिंह पांगती के साथ आज की यह बातचीत है। अपने बुजुर्गों की ठेठ परम्परा पर चलने वाले 86 वर्षीय उत्तम सिंह जी से उन दिनों की याद सुनना भी अद्भुत लगता है जब वह पढ़ाई की धुन में इलाहाबाद चले गये। बातचीज का सिलसिला आगे बढ़े, इससे पहले इनके बारे में बता दें।

1889 में मिलम में जन्मे धरमु सिंह की उनकी समाजसेवा देखते हुए समाज ने 'राय' पदवी का सम्मान दिया। इनका विवाह क्वीटी के रावत घराने में हुआ था परन्तु अल्पायु में श्रीमती जी की मृत्यु होने पर दूसरा विवाह वहीं से दलीप सिंह रावत की पुत्री से हुआ। एक पुत्री भी हुई लेकिन जन्म के शिशुकाल में ही मृत्यु हुई। दूसरी ओर दूसरी पत्नी का भी अल्पायु में निधन हो गया। जनसेवी धरम राय ने

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाओं की श्रृंखला में आ जो कथा है वह उस दौर की है जब पटवारी का दबदबा ज्यादा हुआ करता था। वर्तमान में स्थिति बदली है और पुलिस के हाथ व्यवस्था है। फिर भी लोककथा का यह भाग अपना सन्देश तो देता ही है। -सम्पादक

लोक कथाएं——— यू.आर.टम्टा

जिन्दा बिच्छू, मर कर साँप

कुमाऊँ तथा गढ़वाल के जिलों में ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पुलिस का कार्य पटवारी व पेशकार करते हैं तथा उन्हें, राजस्व के अतिरिक्त, पुलिस का अधिकार प्राप्त है। पहले इन जिलों में अपराधों की नगण्य सी घटनाएँ होती थीं, हत्या एवं डकैती जैसे अपराध तो बिल्कुल नहीं। कई वर्षों में एक आध घटना औरतों की मौत की हो जाती थी, वह भी आत्महत्या अथवा घरेलू झगड़े में लगी चोट के कारण-जो वास्तव में आवेश के क्षणों में लग जाती थी, और जान से मार डालने के इरादे से नहीं। चोरी की भी कोई बड़ी वारदातें नहीं होती थीं, यदि कोई हुई भी तो बहुत मामूली- किसी ने दूसरे के खेत से घास काट ली, घर के बाहर रखा कोइ बर्तन उठा लिया या किसी के खेत से ककड़ी (खीरा) खा लिया बस। अत: स्वाभाविक रूप से वहाँ पर पुलिस थाने या चौकियों की आवश्यकता नहीं समझी गयी। अत: मौत, आत्महत्या तथा इसी तरह की अन्य वारदातों से निपटने के लिये पटवारी, जो कि मुख्यत: राजस्व का काम देखता था, ही अधिकृत रहता था। यह व्यवस्था अंग्रेजी शासन से पूर्व भी न्यूनाधिक इसी प्रकार की थी। इन क्षेत्रों में अधिकांश जनता निरक्षर, अन्धविश्वासी परन्तु भोली भाली एवं ईमानदार थी। अत: भोली-भाली जनता पर पटवारी तथा उसका चपणासी (चपरासी) तरह-तरह के अत्याचार करते थे। जनता इतनी सीधी-साधी थी कि बिना किसी हथियार के, अकेले पटवारी या उसका चपणासी, दस-दस लोगों को गिरफ्तार करके ले आता था। किसी प्रतिरोध का कोई प्रश्न ही नहीं था, भले ही कोई अपराध न किया हो और नाहक गिरफ्तार किया जा रहा हो। लोगों के इस भोले आचरण के कारण पटवारी तथा उसके चपरासी आये दिन इन पर असहनीय अत्याचार करते थे। निर्दोष व्यक्ति से अपराध कबुलवा लेते। अपराध कबूलने के क्रूरतम हतकण्डे अपनाते, जैसे बिच्छू झाड़ बदन में लगाना, पेड़ पर चढ़वा कर पेड़ को जड़ से कटवाना, लाल मिर्च का धूप देना इत्यादि। पटवारी का जितना खौफ लोगों में होता उतना ही उसके चपरासी का भी। चपरासी का दर्जा पुलिस हेड कान्स्टेबल के समकक्ष होता था।

एक बार गाँव में अन्धेरी रात में तीसरे पहर अचानक शोर मचा। लोग चिल्लाने लगे, औरतें तथा बच्चे घरों में दुबक गये। काफी देर तक तनाव छाया रहा। जब लोगों का शोर समाप्त हुआ और लोग एक घर के आँगन में इकट्ठे हुये, तब लगभग 85 वर्ष आयु का एक वृद्ध लाठी के सहारे घर से बाहर निकला। वह भी शोर सुनकर भयग्रस्त था और इससे पहले उसे बाहर जाने की हिम्मत नहीं हुई थी। उसने लोगों से पूछा- -क्या बात हो गई?' लोगों ने बताया कि रात को एक घर में बाघ घुस आया था तथा एक बच्चे को उठाकर ले गया। चारों ओर बच्चे का खून बिखरा पड़ा है। बूढ़े ने एक ठण्डी सांस लीऔर भयमुक्त होकर बोला ''बस, इतने पर ही इतना अधिक शोर? मैं तो समझा था कि पटवारी या चपरासी आ गया।'' इतना कह कर वह अन्दर चला गया और बिस्तर पर सो

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

नियंत्रण तो होना ही चाहिये
भूमि चाहे देवों की ही हो

उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा जाता है और मान्यता है कि देवों का वास इस पर्वत प्रदेश में है। साधना और वीरता के किस्सों से भरा यह राज्य का परिचय का मोहताज नहीं है। पहाड़ के लोगों की 'सरलता' और 'ठेठ पहाड़ीपन' भी सब जानते हैं। सबका आदर-सम्मान करना और अपनी संस्कृति व मातृभूमि की सुरक्षा के लिये प्रतिबद्ध पहाड़ी कौम में वह सब भी समाहित हैं जो इस पर्वत प्रदेश के वाशिन्दे हैं। इस भूमि को सौभाग्य मिला है कि इसके मूल निवासियों के अलावा शरणागंतों को इसने सहारा दिया। हिमालय जैसी इसकी विराट संस्कृति और सभ्यता होने के बावजूद हाल के वर्षों में जिस प्रकार का उपद्रव यहाँ होने लगा है वह कतई शोभनीय नहीं बल्कि सोचनीय है। आंखिर देवभूमि में यह सब क्या होने लगा है?

भूमि चाहे देवों की ही हो, किसी भी तरह की अति से बचना होता है। इन्द्र के दरबार का किस्सा बार-बार इसी लिये सुनाया जाता है कि जब इन्द्र अपनी अति पर आ गये थे तो उन्हें कीमत चुकानी पड़ी और देवलोक को बचाने के लिये उपाय करने पड़े। बाद में सारे देवताओं ने मिलकर दैत्यों का संहार किया।

ऐसा ही कुछ देवभूमि उत्तराखण्ड में दिखाई दे रहा है। दरअसल पृथक पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड बनने के बाद से जिस प्रकार इसकी बागडोर संभाली जाती रही है वह चकाचौंध के साथ गुनगुने पानी में नहाने जैसा हाल रहा है। अपनी लाचारी, बेरोजगार, साधनों की कमी से जूझ रहे लोगों को यह भ्रम हो गया था कि उत्तराखण्ड राज्य बनते ही उन्हें वह सब मिल जायेगा जो चाहिये जबकि इसके विपरीत अवसरवादी राज्य बनते ही सत्ता की तलाश में झपटमार हो गये। राज्य बनने के इतने वर्षों में विधायक-मंत्री बनने वालों की मौज सबने देखी है। ऐसे मस्त राज्य में भला कौन सा अनुशासन चलेगा? विकास के नाम पर अपने फायदे के लिये रास्ते तलाशे जाने की लगातार कोशिश है। नियम-कानून की बात की जाती है लेकिन अनियंत्रित होकर प्रदेश को रौंदने वालों को देखते हुए वह सब भी खुलेआम होने लगा है जिसकी कभी कल्पना नहीं की थी। इसी में शामिल है कर्णप्रयाग-रुद्रप्रयाग की वह घटना जिसमें निहंग सिखों को लेकर बबाल मचा। सीधी सी बात है गलत को गलत कहने में किसी प्रकार राजनीति नहीं होनी चाहिये।

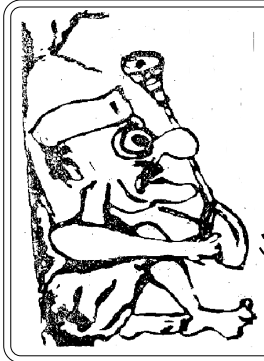

फसक

दाज्यू, योग से ज्यादा तो फूंफाट हो रही ठैरी

अपडेट और अप्टूडेट दिखना बहुत जरूर हो गया है बल

दाज्यू, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के बाद से हमारे मोहल्ले में बब्बू नियमित रूप से अनुलोम-विलोम कर रहा है। कह रहा था- 'लोगों को दिखाई देना चाहिये कि कुछ हो रहा है।' दाज्यू, कालेज में योग शिक्षक चेप दिया गया है लेकिन कोई विद्यार्थी नहीं है। क्या जो होने वाला है। बस, अपडेट और अप्टूडेट दिखना बहुत जरूरी हो गया है बल। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के चम्पावत कैम्पस में तो योग शिक्षा ठण्डी पड़ चुकी है। 80 से अधिक छात्र-छात्राएं हैं लेकिन योग शिक्षक प्रशिक्षक नहीं है। भगवान जाने, ऐसा विषय क्यों लागू कर दिया है जिसके लिये चूरन-मिश्री की बातें हो रही हैं। वैसे भी योग से ज्यादा फूंफाट हो रही ठैरी। आयुष मंत्रालय के टिकली लगे टी-शर्ट लेने के लिये हुजूम उमड़ पड़ता है और सब कहते हैं- 'योग करे निरोग'। टी-शर्ट और नाश्ते के लिये झपट रही भीड़ को जिस ओर चाहे धकेल दो। हर दिन रंगारंग आयोजना ऐसे ही हो जाने वाला ठैरा।

कर्णप्रयाग का योग भी गजब कर गया दाज्यू। सिख युवकों की तूतू-मैंमैं के बाद 5-7 निहंग नगरासू स्थित दमदका साहिब गुरुद्वारे की छत में चढ़ गये। छत पर तोड़फोड़ और पथवार कर रहे निहंगों को संभालना शासन-प्रशासन के लिये कठिन हो गया क्योंकि राजनीति का माहौल भी समेटना हुआ। किसी प्रकार का बखेड़ाबाजी न हो यह भी देखना ही ठैरा। सबका अपना योग और भोग लिखा हुआ है। द्वाराहाट में मोदी सरकार के 12 साल के उपलक्ष्य में आयोजित बहुउद्देशीय शिविर में विधायक मदन बिष्ट और भाजपा नेता अनिल शाही के बीच भयंकर नोंक-झोंक हो गई। विधायक ने शाही को 'दलाल' तक कह दिया। फिर क्या था सब खौलने लगे। सड़क पर समर्थक एक-दूसरे को देख नारेबाजी हाय-हाय करने ही वाले हुए।

अपने प्रदेश में तो क्या पूरे देश में और ही हो रही है। अयोध्या राम मन्दिर को लकर कुछ न कुछ चल ही रहा है। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता आलोश शर्मा ने देहरादून कांग्रेस भवन में पत्रकारों से बातचीज में कहा कि श्रीराम मन्दिर के चढ़ावे में गड़बड़ी सामने आ रही है। इस मन्दिर ट्रस्ट को भंग कर करना चाहिये। दाज्यू, संघ-भाजपा पर बरसते हुए शर्मा ने कहा- 'कथित घोटले में शामिल लोगों पर आपराधिक मुकदमे दर्ज किए जाएं।' गंगोलीहाट के एक गाँव में झगड़े की नौबत आ गई। आरोप लगाया जा रहा है कि जातपात को लेकर हुल्लड़ मचा। अब राजनीति पोता-पाती होती रहेगी। पिथौरागढ़ के भदेलबाड़ में एक बारातघर के मैदान में झूला झूलने को लेकर महिलाओं के दोगुटों में दनादन हुई। कोई कम है न कोई कमी। सब के सब बमक रहे हैं। देहरादून में पुलिस की वर्दी पहनकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने वाले को गिरफ्तार किया गया है। दाज्यू, सोशल मीडिया पर लोकप्रियता के लिये कई लड़भैसा पैदा हो चुके हैं। लस्कर के पूर्व विधायक कुंवर प्रणव सिंह चैम्पियन के खिलाफ कार्रवाई को लेकर प्रदर्शन हो रहे हैं। दाज्यू, कुंवर के मुंह में जो आया बोल देने वला हुआ। मूंछ भी ऐंठनी ठैरी। क्या जो कहें? सब जगजाहिर है। यह भी योग-संजोग ठैरा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

धरम राय का जन...

प्रथम पृष्ठ का शेष

अपने दु:खों को अपने में ढोते हुए इन माँ-बेटी की याद में सगमों में एक धर्मशाला का निर्माण किया। तिब्बत व्यापार से जुड़े अपने पुस्तैनी कार्य के कारण इस शौका परिवार में फिर से विवाह का दबाव था क्योंकि धरम सिंह की भी उम्र कम ही थी और परिवार संचालन में महिलाओं का योगदान प्रथम है। इस प्रकार इनका तीसरा विवाह गुलरे के मान सिंह मर्तोलिया की पुत्री द्योमती से हुआ। इस दम्पत्ति ने अपनी परम्पराओं को सींचा और समाज की जिम्मेदारी भी निभाई। इनके चार पुत्र बाला सिंह, खड़क सिंह, गोविन्द सिंह और उत्तम सिंह और चार पुत्रियां- देवी (धर्मशक्तू), दानी (बृजवाल), गंगोत्री (जंगपांगी), कौशल्या/कोसी (रावत) हुए।

बाला सिंह जी की अगली पीढ़ी मे वीरेन्द्र सिंह, ईश्वर सिंह, दीक्षा (धनी) और लक्ष्मी हैं। खड़क सिंह जी के बाद पीढ़ी में डॉ.हरीश, पुत्रियां ललिता, सुमन, बीना व रेखा हैं। गोविन्द सिंह जी के आगे पीढ़ियों में पुत्र सतीश सिंह, पुत्रियां गीता, हीरा, जानकी, अनीता व किरन हुए। इसी प्रकार उत्तम सिंह जी के बाद पीढ़ी में सुपुत्र शैलेन्द्र, सुपुत्री सीमा (बृजवाल) केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षिका हैं।

दूरदृष्टि धरम राय ने तिब्बत व्यापार समाप्ति के समय 1962 में मल्ला घोरपट्टा में 15 नाली जमीन खरीद के बाद अपने परिवार को वहाँ शिफ्ट किया। अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिये दिल्ली कलकत्ता तक सम्पर्क बनाए रखा। हल्द्वानी रामनगर के बनियों से भी उनकी प्रगाढ़ता रही। अपने कारोबार में उन्होंने परिवार के सदस्यों सहित कई अन्य लोगों को शामिल कर लिया। इस पूरे व्यापारिक तन्त्र के बीच भी शिक्षा के प्रति उनकी जागरुकता ही थी कि बच्चों को शिक्षित बनाने में आगे रहे।

उत्तम सिंह जी अपने बचपन की यादों में लौटते हुए कहते हैं- 1941 में मिलम में जन्म लेने से वही सब देखा जो सीमान्त के तत्कालीन बात-व्यवहार में समाया था। तिब्बत व्यापार के उन दिनों में सारे परिवार सक्रिय रहते। पिता जी की धार्मिक कार्यों में रुचि होने से वह कैलास यात्रियों के सहयोग के लिये तत्पर रहते थे। मौसम के अनुरूप माइग्रेशन में पूरा परिवार मिलम-दरकोट-भैंसखाल रहता। इसी अनुसार बच्चों की पढ़ाई होती थी। कक्षा पाँच की बार्ड परीक्षा कव्वाधार हुई। नमजला से हाई स्कूल किया। बोर्ड का सेन्टर काण्डा (बागेश्वर) हुआ करता था। मुनस्यारी से दो दिन में काण्डपा पहुँचते थे। इस पैदल यात्रा में पढ़ने वाले युवा कमरा किराये पर लेकर रहते, एक कमरे में चार लोग लैम्प जलाकर पढ़ते थे। पढ़ाई की धुन में लैम्प बीचों बीच रखा जाता और रातभर पढ़ते। 1957-58 में अल्मोड़ा फिर इलाहाबाद जाना हुआ। वहाँ भी पढ़ाई की यही धुन थी। पठन-पाठन का माहौल मिला तो दिन-रात एक कर दिया। उस समय के मनोहर पांगती आईएएस, कल्याण सिंह मर्तोलिया सीबीआई, लक्ष्मण सिंह जंगपांगी व्यवसाय क्षेत्र में अग्रणीय रहे हैं। उत्तम सिंह जी एलएलबी करने बाद कुछ वर्षों तक सहायक अभियोजना अधिकारी रहे। उसके बाद न्यायिक सेवा में प्रवेश किया और अतिरिक्त जिला जज के पद से सेवानिवृत्त हुए। वे उच्च न्यायिक सेवा में चयनित होने वाले पहले शौका हैं। इनका विवाह कारखेत बाला सिंह मर्तोलिया की सुपुत्री गंगोत्री जी से हुआ। वर्तमान में जोहार नगर, भोटिया पड़ाव हल्द्वानी में निवासरत हैं। हल्द्वानी के पुराने बाशिन्दे होने के अलावा पिघलता हिमालय परिवार से इनकी बेहद घनिष्ठता है। पांगती जी बताते हैं- मुन्सिफ मजिस्ट्रेट की पोस्टिंग के समय भोटिया पड़ाव क्षेत्र में प्लाटिंग हो रही थी, तब आधा बीघा ले लिया। अपनों के बीच रहते हुए बचपन की खट्टी-मीठी यादों के साथ जज साहब हमेशा ऊर्जावान बातें करते हैं। उनका मानना है जब हम सकारात्मक कार्य और सोच रखते हैं तो इससे अपनी संस्कृति और संस्कार को पोषित कर सकते हैं।

इनकी यादों में बचपन का देखा और बुजुर्गों से सुना वह सबकुछ है जो नई पीढ़ी के लिये आश्चर्यजनक कहानी होगी। किन कठिन परिस्थितियों में पिता धरम राय अपने परिवार को जोड़े रखा। सीमान्त लेकर भाबर तक अपने बड़े भाई तेजू के के साथ धरमु (धरम राय) कार्य योजना बनाते और जनहित के कार्य भी करते। वैद्यों से सम्पर्क कर दवा व जड़ी बूटी अपने पास रखते और दूरस्थ क्षेत्र में स्वास्थ्य कारणों से परेशान लोगों को इसका वितरण करते और परामर्श देते। स्वयं के खर्चे पर उन्होंने यात्रा मार्ग व पुलों के सुधार का कार्य करवाया। तल्ला जोहर में रामगंगा नदी के पश्चिम में लाचुली के दूसरी ओर रमारी की चढ़ाई में पानी की कमी देखते हुए धरम राय जी ने बांखधार में अपने खर्चे पर एक प्याऊ लगाया, जहाँ यात्रियों को पानी पिलाने के लिये एक आदमी नियुक्त किया। इसी प्रकार मापांग की रोड बनाने के बाद अपनी ओर से चना औरे चाय का इन्तजमा किया ताकि यात्रियों को इस दुर्गम में कुछ राहत मिल सके। (जोहार का जनसेवक, श्री गजेन्द्र सिंह पांगती की कृति में विस्तार से दिया गया है)।

धरम राय जी के बंशज अपने-अपने तरीके से समाजिक कार्यों में पुरजोर जुटे हैं, इन सबके प्रेरणापुंज के कार्यों का उल्लेख जरूरी है। धरम राय ने अपने समय में कुछ ऐसे कार्य किये जो असम्भव लगते थे। मापांग में सड़क निर्माण और मिलम में गोरीगंगा पार से पानी(दूध पानी) लाना ऐसे ही कार्य हैं। जब मुनस्यारी मिलम मार्ग खुला तो एकदम खड़ी चट्टान के पास गोरीगंगा का बहाव डरावना लगता था। नदी के पुल बनाकर जैसे तैसे यात्रा की जाती थी। उन दिनों में अपने बलबूते दुस्साहसिक कार्य करने का निर्णय धरम राय ने लिया और सीढ़ीनुमा रास्ता बनाया ताकि आने-जाने में खतरा न हो। साधनों के अभाव में भी उन्होंने कार्य करने वाले श्रमिकों का गैंग बनाया और अथाह धनराशि खर्च कर नदी की धारा बदलने का कार्य करते रहे। अपने जुनून में रहने वाले धरम राय की ख्याति उनके कार्यों से दूर-दूर तक फैली।

जब कोई जनहित कार्य होता है एकाएक कईयों के समझ में नहीं आता है। ऐसा ही धरम राय जी के समय भी हुआ। दूध की तरह दिखाई दे रही जल धारा को मिलम में लाने की इच्छा रखने वाले धरम राय ने पांगती कचहरी में इस बारे में बराबर चर्चा की। स्वयं का धन खर्च करते हुए थांगची मैदान तक गूल बनाई गई। इस प्रकार दूध की तरह स्वच्छ व मीठा जल लाने में वह सफल हो गये। पचास के दशक में जब आज की तरह संसाधनों का आभाव था, इस प्रकार के बड़े कार्यों को निस्वार्थ रूप से करना किसी पुण्यात्मा के बस की ही बात थी। बचपन की देखी-सुनी को याद करते हुए उत्तम सिंह पांगती जी बताते हैं- गाँव में पानी आने का जश्न बच्चों के लिये भारी कौतुहल था। वाकेई जज साहब की देखी-सुनी परिवार की घटना मात्र न होकर समाज के लिये प्रेरणा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तैयारियां

हरिद्वार में प्रस्तावित कुम्भ मेले को वन विभाग के सामने बड़ी परीक्षा

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

हरिद्वार में प्रस्तावित कुम्भ मेले की तैयारियां पूरे जोर-शोर से चल रही हैं। राज्य सरकार इस आयोजन को भव्य, दिव्य और सुरक्षित बनाने के लिए हर स्तर पर व्यापक तैयारियों में जुटी हुई है। हालांकि इस बार राज्य में अर्धकुम्भ प्रस्तावित है, लेकिन व्यवस्थाएं महाकुम्भ के स्तर की की जा रही हैं। सरकार को उम्मीद है कि देश-दुनिया से करोड़ों श्रद्धालु हरिद्वार पहुँचेंगे। ऐसे में सुरक्षा, यातायात, आवास और अन्य व्यवस्थाओं के साथ-साथ एक ऐसी चुनौती भी सामने है, जो न तो किसी निमंत्रण की मोहताज है और न ही किसी प्रशासनिक आदेश को मानती है। यह चुनौती है जंगलों से निकलकर आबादी वाले क्षेत्रों में पहुँचने वाले हाथियों के झुण्डों की। वन विभाग के सामने इस समय सबसे बड़ी चिन्ता उन गजराज गैंग को लेकर है, जो हरिद्वार डिवीजन और आसपास के क्षेत्रों में लगातार सक्रिय रहते हैं। इन हाथियों के कई समूह ऐसे हैं, जो जंगलों से निकलकर खेतों, गाँवों और शहरों की ओर पहुँच जाते हैं।

खास बात यह है कि इनमें कुछ हाथी इतने जिद्दी और आदतन हो चुके हैं कि उन्हें इंसानी आबादी और खेती वाले क्षेत्र जंगल से ज्यादा आकर्षित करते हैं. वन विभाग ने ऐसे हाथियों को लेकर विशेष रणनीति तैयार की है। विभाग का मानना है कि हाथियों के इन समूहों को नियंत्रित करने के लिए उनके नेताओं यानी कमाण्डर हाथियों पर नजर रखना सबसे जरूरी है। यही वजह है कि इस बार वन विभाग की पूरी खाकी ब्रिगेड इन शैतान कमाण्डरों की गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है, ताकि उनकी प्लानिंग को पहले ही किल किया जा सके। हरिद्वार डिवीजन में रहने वाले लोगों के बीच एक हाथी खासा चर्चित है। स्थानीय लोग उसे एक दांत वाला हाथी कहकर पुकारते हैं। वन विभाग के रिकॉर्ड में भी यह हाथी बेहद शैतान माना जाता है। यह हाथी कई बार आबादी वाले क्षेत्रों में देखा गया है और इसकी गतिविधियों ने वन विभाग की चिंता बढ़ाई है। विभाग ने इस हाथी का चिन्हीकरण कर लिया है और इस पर विशेष निगरानी रखने की योजना बनाई है. अधिकारियों का मानना है कि यह हाथी न केवल अपने व्यवहार के कारण अलग पहचान रखता है, बल्कि कई बार मानव-हाथी संघर्ष की स्थितियां भी पैदा कर चुका है। यही कारण है कि कुम्भ मेले से पहले इसे लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। अध्ययन के दौरान वन विभाग ने ऐसे चार प्रमुख गजराज गैंग की पहचान की है, जो सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण माने जा रहे हैं। ये हाथी समूह बेहद जिद्दी हैं और कई बार वन विभाग के प्रयासों के बावजूद अपने पारम्परिक मार्ग छोड़कर आबादी वाले क्षेत्रों में पहुँच जाते हैं।

अधिकारियों के अनुसार ये हाथी अब शहरों और गाँवों के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि सप्ताह में कई बार जंगल से निकलकर आबादी वाले क्षेत्रों में घूमते हुए देखे जाते हैं। यही वजह है कि कुम्भ जैसे विशाल आयोजन के दौरान इनकी गतिविधियां गम्भीर चिन्ता का विषय बनी हुई है वन्यजीव विशेषज्ञों का मानना है कि हाथियों के प्राकृतिक मार्गों में लगातार हस्तक्षेप होने के कारण उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में कठिनाई होती है। नतीजतन वे गाँवों और कस्बों से होकर गुजरने को मजबूर हो जाते हैं। यही कारण है कि हरिद्वार डिवीजन को मानव-हाथी संघर्ष के लिहाज से राज्य के सबसे सम्वेदनशील क्षेत्रों में गिना जाता है.. वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार प्रत्येक हाथी समूह में कुछ प्रमुख टस्कर हाथी होते हैं, जो पूरे झुण्ड का नेतृत्व करते हैं। विभाग ने ऐसे 8 टस्कर हाथियों की पहचान की है, जो अपने-अपने समूह के लीडर हैं। वन विभाग का मानना है कि यदि इन टस्कर हाथियों की गतिविधियों पर नजर रखी जाए, तो पूरे समूह की गतिविधियों का आकलन किया जा सकता है। यही कारण है कि विभाग अब इन हाथियों के व्यवहार और आवाजाही के पैटर्न का अध्ययन कर रहा है। रिकॉर्ड के अनुसार श्यामपुर रेंज और झिलमिल झील के आसपास के क्षेत्र हाथियों की आवाजाही के प्रमुख मार्ग हैं। वन विभाग ने जगजीतपुर और भोगपुर गाँव के आसपास के इलाकों को महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट के रूप में चिन्हित किया है, जहाँ हाथियों की गतिविधियां सबसे ज्यादा दर्ज की जाती हैं। वन विभाग इस कार्य के लिए WWF और WII जैसी संस्थाओं के साथ समन्वय कर रहा है।

अध्ययन पूरा होने के बाद चयनित हाथियों को रेडियो कॉलर पहनाए जाएंगे। रेडियो कॉलर की मदद से वन विभाग को हाथियों की लोकेशन और गतिविधियों की रियल टाइम जानकारी मिल सकेगी। अधिकारियों का मानना है कि यह तकनीक कुम्भ मेले के दौरान सम्भावित खतरों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कुम्भ मेले के दौरान करोड़ों श्रद्धालुओं के हरिद्वार पहुँचने की सम्भावना है। ऐसे में हाथियों की मौजूदगी किसी भी समय गम्भीर स्थिति पैदा कर सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि हाथियों का कोई झुण्ड भीड़भाड़ वाले क्षेत्र में पहुँच जाता है, तो भगदड़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। सबसे बड़ी चिन्ता इस बात को लेकर है कि जिन क्षेत्रों से हाथी आबादी वाले इलाके में प्रवेश करते हैं, उन्हीं क्षेत्रों के आसपास कुम्भ के दौरान पार्किंग स्थल, टेंट सिटी और अस्थायी आवास बनाए जाते हैं। यानी जहाँ हाथियों की आवाजाही दर्ज होती है, वहीं बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की मौजूदगी भी रहती है। ऐसे में वन विभाग की जिम्मेदारी कई गुना बढ़ गई है वन विभाग ने हाथियों की आवाजाही को नियंत्रित करने के लिए भौतिक अवरोध भी तैयार करने की योजना बनाई है। इसके तहत लगभग 8 किलोमीटर लम्बे क्षेत्र में खाई बनाई जाएगी, ताकि हाथी आसानी से आबादी वाले क्षेत्रों की ओर न बढ़ सकें। इसके साथ ही इसी क्षेत्र में सोलर फेंसिंग भी लगाई जाएगी। विभाग दो वॉच टावर स्थापित करने की तैयारी में है, जहाँ से सम्वेदनशील इलाकों की निगरानी की जाएगी।

इसके अलावा पाँच क्विक रिस्पॉन्स टीम भी तैनात की जाएंगी। प्रत्येक टीम में लगभग 30 कर्मचारी होंगे और उनका नेतृत्व एसडीओ स्तर के अधिकारी करेंगे। किसी भी आपात स्थिति में ये टीमें तुरन्त मौके पर पहुँचकर स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास करेंगी। कुम्भ मेले के दौरान करोड़ों श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता है लेकिन इसके साथ ही वन विभाग के सामने एक और जिम्मेदारी है, वो है हाथियों और इंसानों के बीच सुरक्षित दूरी बनाए रखना। चार सक्रिय गजराज गैंग, करीब 30 चिन्हित हाथी, आठ प्रमुख टस्कर और एक कुख्यात एक दांत वाला हाथी फिलहाल वन विभाग की निगरानी सूची में हैं। इनकी गतिविधियों पर चौबीसों घण्टे नजर रखी जा रही है। साफ है कि कुम्भ के सफल आयोजन के लिए सिर्फ यातायात और सुरक्षा प्रबन्धन ही पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि जंगलों के इन बिन बुलाए मेहमानों की गतिविधियों को नियंत्रित करना भी उतना ही जरूरी होगा। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि वन विभाग की खाकी ब्रिगेड इन शैतान कमाण्डरों की चाल को किस हद तक नाकाम कर पाती है और करोड़ों श्रद्धालुओं के बीच मानव और वन्यजीव संघर्ष की आशंका को कितना कम कर पाती है। अर्ली वार्निंग सिस्टम फॅार एलीफेंट प्रोजेक्ट के तहत एक विशेष मोबाइल एप भी विकसित किया जा रहा है। यह एप वन विभाग के सभी कर्मचारियों के मोबाइल में इंस्टॉल रहेगा। जैसे ही कैमरे में हाथियों की मूवमेंट डिटेक्ट होगी, तत्काल अलर्ट जारी होगा और सम्बन्धित पूरे स्टाफ को तुरन्त सूचना मिल जाएगी। जिससे मौके पर जाकर हाथियों को जंगल में खदेड़ा जाएगा। इसके अलावा जंगल और शहर की सीमा पर एक दो किलोमीटर लम्बा पेट्रोलिंग ट्रैक भी बनाया जाएगा। कुम्भ मेले के करीब डेढ़ करोड़ रुपए के बजट से अर्ली वार्निंग सिस्टम लगाया जाएगा। साथ ही चालीस लाख रुपए के बजट से ट्रैक का निर्माण होगा। ट्रैक बनने के बाद वन कर्मचारियों को आवाजाही में दिक्कत नहीं आएंगी। 2027 कुम्भ मेले के दौरान भारी भीड़ को देखते हुए यह व्यवस्था सुरक्षा के लिहाज से बेहद अहम मानी जा रही है।

यूपीसीएल की पहल

मोबाइल पर देखें प्रतिदिन बिजली की खपत

देहरादून। स्मार्ट मीटर की मदद से उपभोक्ता अब अपनी प्रतिदिन की बिजली खपत देख सकेंगे। पहले खपत की जानकारी मुख्य रूप से मासिक बिल आने के बाद मिलती थी लेकिन अब उपभोक्ता दिन प्रतिदिन उपयोग पर नजर रख सकते हैं। इससे यह समझने में आसानी होती है कि बिजली का उपयोग कब और कितना बढ़ रहा है तथा खर्च पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

उत्तराखण्ड पावर कार्पोरेशन लि. के मुख्य अभियन्ता शेखर त्रिपाठी के अनुसार, स्माट मीटर आधुनिक बिजली व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके माध्यम से मीटर रीडिंग और बिलिंग जैसी प्रक्रियाएं स्वत: संचालित होती हैं, जिससे उपभोक्ता को अधिक सुविधा मिलती रहती है। उन्होंने बताया कि स्मार्ट मीटर ऐप पर उपभोक्ता खपत, बिल और भुगतान से जुड़ी जानकारी आसानीसे प्राप्त कर सकते हैं। बताया कि विभाग ने कई स्थानों पर स्मार्ट मीटर के साथ चेक मीटर लगाकर इसकी पुष्टि की है कि स्मार्ट मीटर पूरी तरह सटीक एवं विश्वसनीय रीडिंग देता है। ऐप के माध्यम से शिकायतें भी दर्ज होंगी।

नगर पालिका टनकपुर

विकास से ज्यादा विश्वास पर राजनीति का घोटा लग रहा है

टनकपुर। नगर पालिका परिषद टनकपुर में विकास के वायदे, विकास का दावे बहुत होते रहे हैं लेकिन सच्चाई तो यह है कि विकास से ज्यादा विश्वास पर राजनीति का घोटा लग रहा है। कहने को सीएम विधानसभा क्षेत्र का यह प्रमुख पालिका क्षेत्र है और पूर्णागिरी मेले का आँगन परन्तु पिछले वर्षों में जिस तरह की राजनीति यहाँ रही है उसने सबकुछ हिलाकर रख दिया। पालिका चैयरमैन और ईओ के बीच न जाने किस बात को लेकर नहीं बनी वह आपस में ही जानें लेकिन आम जनता खूब खुसरबुसर करती रही। हालात यह हो गये कि एक-दूसरे के खिलाफ मोर्चा खोलने का काम होने लगा और किसी प्रकार माहौल शान्त हुआ। ईओ साहब बदल गये तो लगा कि अब कुछ परिवर्तन होगा लेकिन क्या जो हो रहा होगा? क्योंकि सभासदों ने स्वयं ईओ व सीएम कैम्प कार्यालय में दस सूत्रीय मांगपत्र सौंपा है। 11 में से 9 सभासदों ने संयुक्त रूप से मांग पत्र देते हुए चेतावनी दी है कि समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो आन्दोलन होगा। इनका कहना है कि पालिका के कई निर्माण कार्य केवल फोटो खिंचवाने तक सीमित रह गये हैं। आम जनता की समस्याओं का समाधान नहीं हो रहा है।

अपने सम्मानित साथियों से निवेदन- पिघलता हिमालय

पिघलता हिमालय अपनी धारा के साथ निरन्तर है, ऐसे में सम्मानित साथियों से निवेदन है कि वह समय-समय पर सदस्यता, उत्साह हेतु सन्देश के रूप में सहयोग करेंगे। लेखकगणों की कलम चलती रहेगी। आफलाइन/ऑनलाइन पत्र के अलावा ब्लॉग इत्यादि के रूप में इसको विस्तारित किया गया है। अपने अमूल्य सुझाव भी देंगे। -व्यवस्थाक

ज्योतिष की बातें 288

7 जुलाई 2026 को बुध वक्री गति से चलते हुए वापस स्वराशि मिथुन में प्रवेश करेगा अत: बुध अत्यन्त बली रहेगा। अत: अगले 30 दिन बुध वाणिज्य, व्यवसाय, बुद्धि, लेखन, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में वृषभ, मीन, मकर, वृश्चिक, कन्या व सिंह राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। शेष राशि वालों के लिए भी बुध सामान्य शुभ रहेगा। लेकिन प्रारम्भ के 15 दिन बुध अस्त रहने के कारण बुध के शुभफलों में कुछ न्यूनता रहेगी।

एकादशी व्रत- सूर्योदय कालीन एकादशी के दिन व्रत किया जाता है लेकिन यदि एकादशी अथवा द्वादशी तिथि का क्षय हो रहा हो तो व्रत दशमीयुता एकादशी के दिन ही किया जाता है। इस बार पूर्वी भारत में द्वादशी तिथि का क्षय हो रहा है और पश्चिमी भारत में एकादशी तिथि का। इसलिए सम्पूर्ण भारत में दशमीयुता एकादशी तिथि अर्थात् शुक्रवार 10 जुलाई 2026 को योगिनी एकादशी का व्रत किया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

पर्यटकों का रिसोर्ट में हंगामा, अभद्रता करने पर गिरफ्तार हुए

रामनगर। प्रदेश में बढ़ती जा रही अराजकता का नजारा रामनगर में भी दिखाई दे रहा है। गाजियाबाद से रामनगर घूमने आए पर्यटकों ने रिसोर्ट में जमकर हंगामा किया। रिसोर्ट मैनेजर से मारपीट व बीच-बचाव को पहुँची महिला दरोगा के साथ धक्कामुक्की व अभद्रता की गई। चण्डीगढ़ निवासी पर्यटक अविनाश दिलशाद, गाजियाबाद निवासी कोमल शर्मा, जिप्सी चालक रामनगर भवानीगंज निवासी शमशाद को गिरफ्तार कर अविनाश को जेज भेजा गया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तेजम पीएचसी रेफर सेन्टर बनकर रह गया

थल। पिथौरागढ़ और बागेश्वर जिले की सीमा पर स्थित तेजम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चिकित्सकों के अभाव में रेफर सेन्टर बनकर रह गया है। 65 हजार की आबादी क्षेत्र में चिकित्सकों के तीन सृजित पदों में केवल एक तैनात है। तल्ला जोहार के 50 और बागेश्र के 12 गाँवों की आबादी इस केन्द्र पर निर्भर है।

मदकोट बस सेवा को विस्तारित करें

मदकोट। मदकोट से 21 किमी दूर मुनस्यारी तक रोडवेज द्वारा बस संचालित न होने से लोग बेहद मायूस हैं। उनका कहना है कि मदकोट-देहरादून बस सेवा को मुनस्यारी तक संचालित किया जाना चाहिये। इसके अलावा भी इस सीमान्त क्षेत्र में बस सुविधाएं बढ़ाने की मांग उठाई जा रही है ताकि यात्रियों परेशानी से बच सकें।

अटैच निरस्त, लौटने लगे शिक्षक

हल्द्वानी। जिले में लम्बे समय से अपने मूल विद्यालयों को छोड़कर अन्य जगहों पर सम्बद्ध चल रहे शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को सख्त आदेश जारी हुआ है। महानिदेशालय के आदेश के बाद मुख्य शिक्षाधिकारी गोविन्द राम जायसवाल ने सभी सम्बद्धीकरणों को तत्काल प्रभाव से निरस्त करने का आदेश जारी किया। असल में इधर-उधर अटैच होने की बराबर शिकायत व चर्चा होने लगी थी।

रामगढ़ में गुलदार का आतंक

नैनीताल। जिले के रामगढ़ ब्लाक के गाँवों में गुलदार की दस्तक से लोगों में भय का माहौलै। छीमी मटेला, बसगांव, सिमराड, कोटवा, सोकुली समेत अनेक ग्रामों में दिनदहाड़े गुलदार दिखने से स्थानीय लोग सहमे हुए हैं।

जमीन घोटाले पर कई छापेमारी

हरिद्वार। जनपद के चर्चित जमीन घोटाले को लेकर विजिलेंस टीम एक्शन में है। टीम ने कार्रवाई तेज करते हुए जिन लोगों के नाम एफआईआर में शामिल हैं, उनके ठिकानों पर छापेमारी की है। बताया जाता है कि विजिलेंस टीम दस्तावेजों और साक्ष्यों की तलाश में अलग-अलग ठिकानों पर गई। इस जाँच में कई अहम तथ्य सामने आए हैं।

परिक्रमा

फचैऽक

मंदिरनाक् भ्यैर चप्पल हरांछी, भागवत काथ पौ पर्वन में सुन चांदी चढ़ावा चोरि हालो, मंदिराक् मजबूत कम्रन में मंदिराक् मजबूत कम्रन में, विकास कां बटी कां पुजि गो पैंली चप्पल ज्यात सटकूंछी, वां अलीगढ़क ताव टुटि गो हम हिंदू भयां गर्बील कौनू, औरनकि यसि औकात कांछी यसि चोरि तो कैं न हुंछि, मंदिरनाक् भ्यैर चप्पल हरांछी।

गणेश पाण्डेय

मल्ला जोहार में मेडिकल स्टाफ भेजें

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति ने मल्ला जोहार में मेडिकल स्टाफ न होने से हो रही दिक्कतों का उल्लेख करते हुए स्टाफ भेजने की मांग की हे। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू का कहना है कि रोटेशन प्रणाली के अन्तर्गत मेडिकल स्टाफ सीमान्त क्षेत्र में नहीं भेजा जा रहा है। इसके अतिरिक्त एएनएम के नियुक्ति का आदेश पारित किया गया था अभी तक बुर्फू गाँव में नहीं पहुँची है। श्री धर्मशक्तू ने मुख्य चिकित्साधिकारी को पत्र भेजकर मांग की है कि सामूहिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभारी डॉ. गौरव कुमार को निर्देशित करने का कष्ट करें अभी हम लोग सीमान्त क्षेत्र का भ्रमण करके इसके अतिरिक्त कबिना मंत्री श्रीमती रेखा आर्य एवं पूर्व राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के भ्रमण कार्यक्रम पर गए थे, स्वास्थ्य टीम भी हमारे साथ गई थी, सभी गाँव में मेडिकल कैम्प का आयोजन किया गया जो सराहनीय रहा। इसके लिए हम स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों, डाक्टर को बधाई देते हैं अभी छूट गए गाँव जैसे की मर्तोली खिचांच, टोला, ल्वां उन गाँवों में भी स्वास्थ्य टीम भेजने हेतु निर्देशित करें। साथ ही रोटेशनल प्रणाली के अन्तर्गत अगला मेडिकल स्टाफ भेजने के लिए भी निर्देशित करें ताकि ग्रामीणों का स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध हो सके।

70साल पुराने रास्ते पर विवाद व गुहार

रुद्रपुर। ग्राम लम्बाखेड़ा क्षेत्र के किसानों ने एक उद्योग संचालक और उसके परिजनों पर जमीन बेचने का दबाव बनाने, सार्वजनिक रास्ते पर अतिक्रमण करने तथा धमकी देने का आरोप लगात हुए एसडीएम से कार्रवाई की मांग की है। इस प्रकरण को लेकर किसानों ने विस्तृत शिकायती पत्र सौंपते हुए न्याय की गुहार लगाइ है। शिकायतकर्ता सोमनाथ बाठला, गुरबख्श लाल और दौलत राम का कहना है कि उनकी कृषि भूमि तक पहुँचने के लिए करीब 70 वर्ष पुराना एकमात्र सार्वजनिक रास्ता है, जो राजस्व अभिलेखों में भी दर्ज है। आरोप है कि विपक्षी पक्ष द्वारा इस रास्ते पर अतिक्रमण कर उसे बन्द करने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे किसानों के खेतों में पहुँचना मुश्किल हो गया है। आरोप लगाया गया है कि किसानों को भूमि बेचने का दबाव बनाया जा रहा है और धमकियां मिल रही हैं। विपक्षी पक्ष ने न्यायालय में वाद दायर कर एकपक्षीय आदेश का हवाला देते हुए सार्वजनिक रास्ते पर दीवार खड़ी करने का प्रयास किया है। इसकी कई बार प्रशासन में शिकायतें की गई हैं लेकिन अब तक प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई है।

हल्द्वानी में लाखों रुपये लेने वाले कोचिंग संस्थानों का निरीक्षण और हुए सील

सुरक्षा व्यवस्था के नाम पर बच्चों के साथ खिलवाड़

हल्द्वानी। महानगर में कोचिंग के लिये नामी संस्थानों पर प्रशासन का डण्डा चला है क्योंकि इन संस्थानों द्वारा जहाँ बच्चों के भविष्य बनाने की बात करते हुए लाखों रुपये लिये जाते हैं वहीं सुरक्षा व्यवस्था के नाम पर बच्चों के साथ खिलवाड़ हो रहा है। बच्चों की भीड़ को आकर्षित करने के लिये लाखों रुपये के विज्ञापन देकर इनके द्वारा माहौल बनाया जाता है और किसी प्रकार की घटना होने पर अपना बचाव कर लेते हैं। कम जगह, सकरी गलियों में ठूंस-ठूंस कर बच्चों को कोचिंग देने वाले ऐसे कोचिंग संस्थानों की जाँच में पता चला कि इन सेन्टरों में फायर अग्निशामक यन्त्र चलाना नहीं आता था। आवासीय क्षेत्रों में चल रहे ऐसे भीड़ भरे संस्थानों में अन्दर से दरवाजा बन्द होता है। यदि किसी कारण कोई अनहोनी हो जाए तो बचाव का क्या इन्तजाम है? जाँच में प्रशासन के साथ जिला विकास प्राधिकरण और दमकल विभाग की टीम भी थी। शहर के कुछ संस्थानों को सील कर दिया गया है। ऐसे में अभिभावक की भी चिन्ता है कि मोटी रकम वसूल चुके इन संस्थाओं द्वारा आगे क्या किया जाएगा, बच्चों के लिये क्या इन्तजाम होंगे।

पर्यटन के लिये 16 करोड़ से श्रृंगार

लोहाघाट। प्राकृतिक सौन्दर्य और इतिहास से भरे चम्पावत जिले को पर्यटन के क्षेत्र में नई पहचान दिलाने की दिशा में हो रहे कार्यों के क्रम में 16 करोड़ से नया श्रृंगार हो रहा है। सीएम की पहल पर लोहावती नदी पर स्थित कोलीढेक झील को आधुनिक पर्यटन हब के रूप में विकसित करने के लिये 16 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना पर कार्य चल रहा है, जिसके पूरा होने पर क्षेत्र पर्यटकों के लिये प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बनेगा।

डीएम मनीष कुमार ने बताया कि परियोजना के तहत कोलीढेक झील के आसपास आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। स्थानीय लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आधुनिक रेस्टोरेंट तैयार किया गया है, जहाँ पर्यटकों को पर्वतीय स्थानीय व्यंजनों का स्वाद भी मिलेगा।

झड़ीपानी प्राचीन मंदिर में प्राणप्रतिष्ठा

मसूरी। झड़ीपानी स्थित प्राचीन शिव हनुमान मन्दिर का जीर्णोद्धार कर मन्दिर में मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा धार्मिक परम्पराओं के साथ पूजा अर्चना कर की गई। 56 वर्ष पूर्व बने मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया गया था। इस अवसर पर पालिका अध्यक्ष मीरा सकलानी सहित तमाम लोग मौजूद थे।

रोडीबेलवाला क्षेत्र में अतिक्रमण हटा

हरिद्वार। नगर निगम ने रोडीबेलवाला क्षेत्र में अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाते हुए सख्त कार्रवाई की है। नगर आयुक्त नन्दन कुमार के नेतृत्व में निगम की टीम ने सार्वजनिक स्थलों पर कब्जे हटाते हुए का कि स्नान पर्व के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा और यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिये अतिक्रमण किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

अवैध कब्जे हटाने की मांग

पिरान कलियर। दरगाह साबिर पाक की सम्पत्तियों पर अवैध कब्जे को लेकर नगर पंचायत की पूर्व सभासद परवीन ने तहसीलदार एवं दरगाह प्रबन्धक को शिकायती पत्र देकर दरगाह की सम्पत्तियों को कब्जामुक्त कराने तथा पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जाँच कराने की मांग की है। आरोप है कि दरगाह का एक पूर्व कर्मचारी लम्बे समय से दरगाह की सम्पत्ति पर अवैध रूप से कब्जा किये हुए है।

बीकेटीसी का नया खुलासा

चमोली। बदरीनाथ केदारनाथ मन्दिर समिति (बीकेटीसी) में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने में लगे हुए सामाजिक कार्यकर्ता व अधिवक्ताा विकेश सिंह नेगी ने सूचना के अधिकार में प्राप्त दस्तावेजों के आधार पर नया खुलासा किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि मन्दिर समिति के कुछ सदस्यों ने एक वर्ष से कम अवधि में टीए/डीए के नाम पर अनाप-शनाप तरीके से खालों रुपये का भुगतान लिया है। उन्होंने श्रद्धालुओं के दान-चढ़ावे के धन के दुरुपयोग पर आपत्ति जताते हुए कार्रवाई की मांग की। साथ ही मीडिया को बताया कि बीकेटीसी ने सूचना अधिकार के तहत यह जानकारी दी है।

6लेन एक्सेस कंट्रोल स्पर टू हरिद्वार परियोजना अन्तिम चरण में

एनएचएआई की दो प्रमुख परियोजनाओं से हरिद्वार को मिलेगी राहत

हरिद्वार। आगामी अर्द्धकुम्भ 2027 को ध्यान में रखते हुए भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) हरिद्वार में सड़क अवसंरचना को मजबूत करने के लिए तेजी से कार्य कर रहा है। हरिद्वार में निर्माणाधीन स्पर टू हरिद्वार और हरिद्वार बाईपास (पैकेज-1) परियोजनाएं पूर्ण होने के बाद न केवल शहर के भीतर यातायात का दबाव कम करेंगी बल्कि बाहरी राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं और यात्रियों को भी सुगम एवं निर्बाध यात्रा का अनुभव प्रदान करेंगी। विकसित की कजा रही 51 किमी लम्बी छह लेन एक्सेस कन्ट्रोल्ड स्पर टू हरिद्वार परियोजना के अन्तर्ग अब तक 46 किमी 6लेन मार्ग का निर्माण पूरा किया जा चुका है। यह कॉरिडोर दिल्ली देहरादून आर्थिक गलियारे को हरिद्वार से जोड़ते हुए हलगोया मुस्तकम से प्रारम्भ होकर भड़ेडी राजपूताना स्थित राष्ट्रीय राजमार्ग 58 तक पहुँचेगा। परियाजना के पूर्ण होने से दिल्ली, मेरठ, सहारनपुर तथा पश्चिमी उ.प्र. से हरिद्वार आने वाले वाहनों को शहर में प्रवेश से पहले ही एक वैल्पिक, तेज और निर्बाध मार्ग उपलब्ध होगा।

अभी तक 9 किमी 4लेन सड़क निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। यह बाईपास बहादराबाद से शुरु होकर एनएच 34 चण्डी मन्दिर के निकट समाप्त होगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जिन्दा बिच्छू, मर....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गया। कहने का तात्पर्य यह है कि उन दिनों नरभक्षी बाघ का इतना आतंक नहीं था, जितना कि चपरासी का।

चौगखाँ में गुमानी नामक ऐसा ही एक चपरासी तैनात था, जिसका आतंक लोगों के रौंगटे खड़ा कर देता था। किसी के घर पर अच्छी बकरी उसे दिख जाय तो उसे उसके घर पहुँचाने का हुक्म होता। उसका डीलडौल भी डरावना था, बड़ी-बड़ी लाल आँखें, तलवार जैसी मूँछें, तवे के समान काला रंग व भालू जैसी रोमयुक्त मोटी-मोटी कलाइयाँ। यूँ तो कभी किसी ने उसे हँसते हुए नहीं देखा, पर कभी कभार मुस्कराता भी था तो उस मुस्कराहट में भी घृणा का पुट रहता था। उसके समय में अपराध तो कोई हुये नहीं, अपराध यों भी कहाँ होते थे, पर अपने बहशीपन के कारण वह कोई झूठा इल्जाम ही लगाकर लोगों को बन्द कर देता। उसके अत्याचारों से जनता तंग आ चुकी थी। तब ऊपर शिकायत करने का, न तो चलन था और न ही किसी को साहस। जैसे कभी कभी दो घनिष्ठ दोस्त आपस में मिलते हैं तो एक दूसरे के कन्धे पर- 'कहो क्या हाल है'-कहते हुए हल्की तपत सी लगाते हैं, उसी तर्ज पर यदि वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिलता जिससे वह नाराज नहीं है- 'कहो क्या हाल है?' कहते हुए इतना जोर का घूंसा मारता कि उस आदमी का कन्धा ही बेकार हो जाता। गरीब किसान किसी प्रकार साधन जुटा कर उसके भोजन की व्यवस्था करते। जब वह भोजन करके उठता तो अपनी हथेली लोटे मुंह पर रख कर अपने भारी भरकम बदल का पूरा भार इस तरह हथेली पर डालता कि लोटा चिपट कर पत्ती हो जाता। गरीब किसान फिर वर्षों तक दूसरा लोटा न खरीद पाता।

उसने अपने पूरी सेवाकाल में लोगों को बहुत तंग किया, झूठे मामलों में फंसाया। लोगों की पीड़ा में उसे आनन्द की अनुभूति होती थी। अपना अत्याचार पूर्ण सेवाकाल पूरा करने के उपरान्त एक दिन वह सेवानिवृत्त हो गया तथा गाँव चला आया। सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी वह गाँव में तरह-तरह के षड़यन्त्र रचता और लोगों में फूट डलवाता। अतः उसका खौफ ज्यों का त्यों ही बना रहा।

एक दिन गुमानी बीमार पड़ गया। अब वह काफी बूढ़ा हो चला था। उससे किसी को सहानुभूति तो कभी नहीं रही। अतः कोई उसे देखने नहीं आया। उसने एक आदमी को भेजकर गाँव वालों को बुलाया। जब तक सब लोग पहुँचे, उसकी साँसें उखड़ने लगी थीं, फिर भी ताकत बटोर कर उसने दोनों हाथ जोड़े और लोगों से अपने अत्याचारों की क्षमा माँगी, और कहा- 'मैंने आप लोगों को जीवन भर अत्यधिक दुखी किया। अब मुझे इसका अफसोस हो रहा है। मैं इस काबिल नहीं हूँ कि मेरी लाश को कोई कन्धा दे। आपने, मेरे जीते जी, मेरा कोई प्रतिकार नहीं किया। अब मैं यह लोक छोड़ रहा हूँ। आप मेरी लाश की बेकद्री करके अपना गुस्सा ठण्डा कर लेना। मेरी लाश के गले में फन्दा लगाकर रस्सी से घसीट कर ले जाना और चट्टान से नीचे गिरा देना।' यह कहते हुए ही उसने बाकी बची शक्ति से अपनी जीभ बाहर निकाली और इसके साथ ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये। गाँव वालों ने एक दूसरे की ओर देखा। गुमानी के प्रति सबके अन्दर घृणा कूट-कूट कर भरी थी। फिर मनुष्य के अन्दर जो चौदह संस्कार जन्मजात होते हैं, प्रतिशोध की भावना भी उसी में से एक होती है। यह सच है कि प्रतिशोध की भावना के बंश में आकर आदमी भले बुरे के विषय में सोचना छोड़ देता है। गुमानी का सुझाव सबको ठीक ही लगा।

तुरन्त एक मजबूत रस्सी मंगाई गई, लाश के गले में फन्दा लगाकर उसे घसीटा जाने लगा। लोगों ने गुस्से में पागल होकर उसकी लाश पर लातों की बौछार लगा दी। ज्यों ही लाश को चट्टान से नीचे गिराने की तैयारी हो रही थी, इलाके का पटवारी वहाँ से गुजरता हुआ दिखाई दिया। वह भीड़ के पास यह देखने आया कि माजरा क्या है, और उसकी नजर लाश पर पड़ गई। लाश के गले में रस्सी का फन्दा अब भी पड़ा था। लात घूंसों से उसके तीन दाँत टूट गये थे। गले में रस्सी का गहरा निशान पड़ गया था। लाश घसीटने से बदन के कपड़े फट गये थे। जीभ बाहर निकली हुई पहले से ही थी। यह स्पष्ट रूप से हत्या का मामला दिखाई पड़ता था।

अतः भीड़ में सम्मिलित सभी लोगों को, जिसमें कि पूरे गाँव के लोग थे, गिरफ्तार कर लिया गया तथा जेल में डाल दिया गया। लोगों को गुमानी की चाल तब समझ आई कि जीते जी तो उसने अत्याचार किये ही, मरते समय भी एक ऐसा जाल बिछा गया कि सब उसमें फंस गये। तब एक बूढ़े ने कहा- ''भई वह जीते जी तो केवल बिच्छू था, मरने पर साँप हो गया।''

हरि सिंह जन्मोत्सव का आयोजन

मुनस्यारी। महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. हरि सिंह जंगपांगी का जन्मोत्सव हरि प्रदर्शनी भवन मल्ला दुम्मर में मनाया गया। आयोजन को लेकर हरि स्मारक समिति सहित ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। प्रातः झण्डारोहण के पश्चात हरिसिंह ज्यू की मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर विद्यालयी बच्चों ने देशभक्ति के गीत व कवितापाठ किया। क्षेत्रवासियों ने परिसर में स्वच्छता अभियान चलाने के अलावा दुस्का-चाँचरी करते हुए उत्सव मनाया।

स्व.हरिसिंह ज्यू की 129 वी जयन्ती

पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतियोगिता के प्रतिभागियों व विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

दरकोट के हीरु दा को श्रद्धांजलि

मुनस्यारी। दरकोट के रंगकर्मी व सदाबहार कलाकार हीरा सिंह भट्ट 'हीरु दा' का कुछ समय अस्वस्थ्य रहने के 20 जून 2026 को निधन हो गया। उनका जाना इस क्षेत्र के लिये के लिये बड़ी क्षति है। 80 वर्षीय भट्ट जी सहज-सरल व्यक्तित्व के अलावा अपने ग्राम के लिये जुझारु थे। एक कलाकार के रूप में उनकी सभी भूमिकाएं सराही जाती रही हैं। दशरथ, अहिरावण, खर-दूषण सभी तरह की भूमिकाओं में वह जीवन्त प्रस्तुति देते रहे। रामलीला हो या होली का हुल्लड़, मेले हों या त्यौहार भट्ट जी हर जगह प्रमुख रूप से मौजूद रहते थे। एक खिलाड़ी के व सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी वह जाने जाते रहे हैं। 70-80 के दशक में जोहार क्लब फुटबाल टूर्नामेंट में दरकोट की ओर से स्व. गणेश सिंह पांगती उर्फ

गणेश फोर्स व हीरा सिंह भट्ट की खूब चर्चा होती थी। वह बालीबाल के भी बेहतरीन खिलाड़ी थे। दरकोट को आदर्श गाँव बनाने में डॉ. शेर सिंह पांगती के सहकर्मी रहे। समूचा क्षेत्र उन्हें याद कर रहा है।

पिघलता हिमालय परिवार स्व. भट्ट को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

वृक्षमित्र ने अपर्णा को जन्मदिन पर उपहार में दिया तिमिला का पौधा

पौड़ी। वृक्षमित्र अभियान (मेरा पेड़ मेरा दोस्त) के तहत अल्मोड़ा के झसियाटाना रीठाखान में पर्यावरणविद् वृक्षमित्र डॉ. त्रिलोक चन्द्र सोनी के सौजन्य से मनीष कुमार व हेमा देवी की पुत्री अपर्णा टम्टा का जन्म दिन तिमिला और तेजपत्ता के पौधे लगाकर मनाया। डॉ. सोनी ने अपर्णा को उपहार में तिमिला का पौधा भेंट किया। साथ ही ग्रामीणों के साथ वृहद स्तर पर वृक्षारोपण किया।

वृक्षमित्र डॉ. त्रिलोक चन्द्र सोनी ने कहा कि जिस रफ्तार से पर्यावरण सन्तुलन बिगड़ रहा है और जलवायु में परिवर्तन आ रहा है, वह आने वाले समय के लिए गम्भीर चेतावनी है। हम अपने व अपने परिवार के सदस्यों के जन्मदिन पर एक-एक पौधा लगाते हैं तो हमारे ये छोटे-छोटे प्रयास जलवायु परिवर्तन रोकने में सहायक हो सकते हैं। के.एल. टम्टा ने अपील की कि एक अभियान के रूप में हमें इस प्रकार के आयोजनों को बढ़ावा देना चाहिये।

सीट पर हलचल तेज

द्वाराहाट में अनिल शाही ने कमर कसी, विधायक मदन सिंह तैयार हैं

आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए प्रदेश की सीटों पर हलचल तेज है। द्वाराहाट में तो इस बार तनाव ज्यादा देखा जा रहा है। पहले तो पार्टी से टिकट को लेकर माहौल बनाया जा रहा है, दूसरा आपसी उलझन में मनमुटाव बड़ा है। कांग्रेस की ओर से विधायक मदन सिंह बिष्ट चुनाव के लिये हर प्रकार से तैयार हैं और माना जा रहा है कि पार्टी उन्हें ही मैदान में उतारेगी। अपनी पार्टी के सन्देश सहित जिस प्रकार से वह सक्रिय हैं वह सीधा संकेत है कि वह पूरी ताकत लगाने लगे हैं। दूसरी ओर भाजपा से अभी टिकट के लिये नेतागण माहौल बना रहे हैं लेकिन जिस प्रकार से अनिल शाही ने कमर कसी है उसे देख यह चर्चा है कि पार्टी उन्हें मौका दे सकती है। भाजपा की ओर से बेहद सक्रिय शाही जमीन से जुड़े नेता हैं। इस बीच द्वाराहाट में बहुउद्देशीय शिविर में विधायक के साथ इनका विवाद भी काफी चर्चा में है। इस विवाद में उपस्थित अधिकारी और आम जन असहज दिखाई दिये थे जबकि मदन बिष्ट और अनिल शाही के समर्थक अपनी-अपनी पार्टी व नेताओं के नारे लगाते दिखाई दिये। कुल जमा द्वाराहाट सीट पर कब्जे के लिये हर तरह से भिड़ने का माहौल दिखाई दे रहा है।

रुद्रपुर में विधायक अरोरा जोश में, ठुकराल का मैदान में होना चुनौती

तराई की रुद्रपुर सीट पर विधायक शिव अरोरा एकमात्र लक्ष्य में दिखाई दे रहे हैं कि किस प्रकार मन्दिर-हिन्दू-सनातन का माहौल बनाकर आगे की पारी शुरु करें। विधायक बनने के बाद से ही शिव अरोरा के तेवर दिखाई देने लगे थे और उन्होंने भाजपा के भीतर अपने को गहरा साबित करने के लिये लगातार दौड़धूप की है। माना जा रहा है कि आगामी चुनाव में पार्टी इन्हें मौका देगी। दूसरी ओर कांग्रेस की ओर से पूर्व विधायक व कांग्रेस में शामिल राजकुमार ठुकराल चेहरे के रूप में हैं। कभी भाजपाई रहे ठुकराल के दिल में वह गुस्सा भी है कि उन्हें पार्टी ने किनारे कर दिया। इसके अलावा अपनी दबंगता के साथ क्षेत्र में पकड़ रखने वाले ठुकराल कांग्रेस की शरण में जाकर जिस प्रकार से जोश भर रहे हैं वह भाजपा के लिये चुनौती है। जिस प्रकार की दहाड़ दोनों ओर से दिखाई दे रही है उससे तराई की इस सीट में अतिसम्वेदनशील बूथ ज्यादा होंगे।

सीएम धामी को लेकर कई चर्चाएं लेकिन चम्पावत सीट पर जोर

यह तो तय है कि 2027 का विधानसभा चुनाव भाजपा सीएम पुष्कर धामी को चेहरा बनाकर लड़ेगी। इसके लिये चारों ओर माहौल बन चुका है। साथ ही धामी को लेकर कई चर्चाएं होने लगी हैं कि वह खटीमा, डीडीहाट, रुद्रपुर, हल्द्वानी सीट से भी लड़ सकते हैं। राजनीति में कुशल हो चुके धामी भी मुस्कराते हुए तैयारी की बात कह देते हैं लेकिन चम्पावत सीट पर ही वह चुनाव लड़ेंगे ऐसा लग रहा है क्योंकि जिस प्रकार से वह चम्पावत विधानसभा सीट पर सक्रिय हैं वह उनके लिये सर्वाधिक सुरक्षित मानी जा रही है। इस सीट पर कांग्रेस की ओर से किसको मौका मिलेगा अभी स्पष्ट नहीं है और चर्चाओं का दौर है लेकिन पूर्व विधायक होमेश खर्कवाल चेहरे के रूप में माने जाते हैं।

दूसरी ओर श्रीमती गीता धामी को लेकर भी कहा जा रहा है कि वह किसी सीट पर बल्कि खटीमा से मौका बना सकती हैं।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सीपू महादेव महाकुम्भ भक्तिमय हुआ

स्वामी विवेकानन्द की मूर्ति का अनवारण

स्यासैं महापूजा पर हुआ भव्य आयोजन

जीवन सिंह दुग्ताल

धारचूला। दारमा घाटी स्थित पावन सीपू ग्राम में 12 साल बाद सीपू महादेव महाकुम्भ के भव्य आयोजन में भक्तिमय माहौल देखने को मिला। मान्यता है कि जब देवाधिदेव भगवान शिव कैलास पर्वत की ओर अपनी तपस्या हेतु प्रस्थान कर रहे थे, तब उन्होंने कुछ समय के लिए इस पावन स्थल पर विश्राम किया था। शिव की वही जागृत तपोभूमि जो सरकारी अभिलेखों में 'सीपू' के नाम से दर्ज है, इसमें निश्चित अन्तराल के बाद इस प्रकार का आयोजन किया जाता है।

सीपू के इस मेले का शुभारम्भ ग्राम सभा सीपू, महिला संघ, कर्मचारी संघ और हिमालय भोजवृक्ष एवं जड़ी बूटी संरक्षण सहकारी समिति के संयुक्त तत्वाधान में पारम्परिक अनुष्ठान के साथ हुआ। इस अवसर पर विधायक हरीश धामी द्वारा स्वामी विवेकानन्द की मूर्ति का अनावरण किया गया। उन्होंने स्यासैं पूजा पर सभी को बधाई प्रेषित की

इस अवसर पर 'स्याङ.ग सै के आलम' (वह पावन स्तम्भ जिस पर देवता का पवित्र निशान बंधा होता है) को बदला। इसके बाद जयकारों के साथ लोक संस्कृति की छटा देखने को मिली।ग्रम की सभी बेटियों को 'खाटो' (शॉल) ओढ़ाकर तथा दामादों को 'सिलै' (पगड़ी) पहनाकर, समस्त देवी-देवताओं को साक्षी मानते हुए उनके परिवारों की सुख समृद्धि एवं मंगलमय जीवन का आशीर्वाद दिया।

आयोजन के दौरान खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये गये। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

तिंकर में घोड़ा जात्रा का अद्भुत नजारा

धारचूला। सीमान्त क्षेत्र में घोड़ा जात्रा का रोमांच भी इन दिनों में देखने को मिला। सीमान्त के तिंकर ग्राम में निश्चित समय में होने वाली इस जात्रा को लेकर उत्साहित लोगों ने भागीदारी की। प्राचीन काल से ही अपनी संस्कृति को पोषित करने वाली इस जात्रा में घुड़दौड़ होती है। दार्चुला की आदिवासी संस्कृति का यह सबसे बड़ा मेला है। इसमें पहाड़ी रास्तों पर घुड़दौड़ के अलावा लोक संस्कृति दिखाई देती है। जिसमें ऊन, कालीन, जड़ीबूटी का व्यापार होता है।

'पिघलता हिमालय' स्थापना के 49वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

गिरीश जोशी

श्रुति निकुंज, निकट- चिमसिया नौला

पिथौरागढ़

एड. पुष्पराज गर्ब्याल

अध्यक्ष

सिद्ध गर्ब्यांग कल्याण सेवा समिति

सितारगंज (उ.सिं.नगर)

Hotel

Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR

चौकोड़ी

मो. 9458920379

6396098804

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236

मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)